RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-07
July-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

साहित्यकार शैलेश मटियानी जी की कथाद्रष्टि का अध्ययन

[1]Saroj Rani[1] and [2]Dr. Navneeta Bhatia

[1]Research scholar OPJS University, Churu (Rajasthan)
[2]Assistant Professor, Hindi department,OPJS University Churu (Rajasthan)

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 30 May 2017
Accepted: 15 June 2017
Published Online: 15 July 2017

Keywords
शैलेश मटियानी, हिन्दी साहित्य, जनकथाकार, आत्मकथा

ABSTRACT

शैलेश मटियानी एक जनकथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। शैलेश मटियानी आधुनिक हिन्दी साहित्य में नई कहानी के दौर के प्रसिद्ध जनकथाकार हैं। उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य लगभग पांच दशकों तक विस्तार पाता है। मटियानी के कहानियों का बिस्मिल्लाह 'रंगमहल' एवं 'अमर कहानी' पत्रिका से होता है। 'शांति ही जीवन है' तथा 'संघर्ष के क्षण' इनकी प्रारम्भिक कहानियाँ है। मटियानी के पास कहानियों एवं उपन्यासों का विपुल भण्डार है। उन्होंने लगभग 250 कहानियाँ एवं 30 के आस–पास उपन्यासों की रचना की है। इसके अतिरिक्त लोककथा संग्रह, बाल साहित्य, आत्मकथा, संस्मरण, वैचारिक निबन्ध आदि मिलते है। शैलेश मटियानी एक प्रतिबद्ध लेखक थे। उनकी प्रतिबद्धता किसी विचारधारा के प्रति नहीं थी बल्कि उन भूखे, नंगे, गरीब और गलीज जिन्दगी जीते लोगों के प्रति थी, जिनकी जिन्दगी को उन्होंने बहुत करीब से देखा और महसूस किया था। किसी खास विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता कई बार एक तिकड़मी राजनीति में परिवर्तित होते हुए देखी गई है। इन सब के कारण मटियानी इसके खिलाफ थे। किसी खास विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध लेखकों ने कभी सहज व स्वाभाविक रचनाएं दी हो जरूरी नहीं है। जब रचनाएँ विचारधारा को आत्मसात करके बोझ ढोती हुई सी नहीं लगती तो उत्कृष्ट हो जाती हैं। मटियानी की रचनाओं में किसी तरह की कौशल व चालाकी की जगह संवेदना की सहजतान सुनाई पड़ती है तथा पाठकों को सहज ही उससे एक जुड़ाव का आकर्षित करती हैं।
.

प्रस्तावना

भारतीय कथा में साहित्य की समाजवादी परम्परा में शैलेश मटियानी के कथा साहित्य का अटूट रिश्ता है। उन्होंने दबे–कुचले, भूखे–नंगों, भिखमंगों, दलितों, उपेक्षितों आदि को बड़ी आत्मीयता के साथ अपनी कथा–साहित्य में पनाह दिया है। शैलेश मटियानी शुरू से लेकर अन्त तक 'स्वतंत्र पथ के राही' रहे हैं। बगैर जनवाद या प्रगतिवाद का बिल्ला लगाए, उन्होंने गरीब, शोषित और वंचित वर्गों की ऐसी दहला देने वाली कहानियां लिखी हैं, जिनमें भारतीय समाज का अंदरूनी दर्द फूट पड़ा है। मटियानी का सबसे प्रिय क्षेत्र–पारिवारिकता या दांपत्य संबंध है। जहाँ गांव की भोली–भाली अनपढ़ जनता के हालात का चित्रण करते हैं। शोषितों, वंचितों के[1] दुख की कथा लिखते है तथा भिखारियों तक के भीतर से रस–स्रोत की टोह लेना नहीं भूलते है। इस कारण मटियानी की कुछ कहानियाँ कालजयी व अविस्मरणीय है– 'इब्बू मलंग', 'रहमतुल्ला', 'प्यास', 'दो दुखों का एक सुख', 'चील', 'शरण्य की ओर', 'छाक', 'अर्द्धांगिनी', 'हरीतिमा', 'मैमूद', नेता जी का चुटिया', 'भेड़े और गड़रिए', 'जुलूस', 'हत्यारे' आदि।

समाज में मानवजीवन के विविध पक्ष होते हैं– सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन। शैलेश मटियानी के साहित्य की लोकप्रियता का आधार भी समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति व अर्थ ही है। इन बदलते मूल्यों को लेकर[2] मटियानी का कथा साहित्य भय एवं भूख से पीड़ित जन–जीवन की दबी आवाज को अभिव्यक्ति देने में सफल सिद्ध हुआ है। मटियानी का समग्र कथा–साहित्य भारतीय जनमानस एवं जनभावनाओं का प्रतिमूर्ति है। अपने अनुभवों व तर्कों के सहारे मानवहितों के पक्षधर बनते दिखते हैं। जहाँ भारतीय समाज का ताना–बाना एवं उसमें पैठी हुई कुरीतियों, विडम्बनाओं तथा विषमताओं का कच्चा चिट्ठा पेश होता है। अतः मटियानी का कथा–साहित्य मनोरंजक एवं पठनीय है जिसे अलग–अलग अध्यायों में रखकर मानव के संघर्ष का समग्र विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ हैं, यही शोधकार्य का उद्देश्य भी है।

शैलेश मटियानी : जीवन–परिचय

जन्म

शैलेश मटियानी का जन्म सन् 1931 में अक्टूबर की 14 तारीख को हुआ था। बचपन का नाम रमेश चन्द्र मटियानी था। जन्मस्थल के रूप में बाडेछीना नामक एक छोटे से गांव का उल्लेख किया जाता है, जो हिमालय की वादियों में अल्मोड़ा से बारह मील दूरी पर बसा हुआ है। अल्मोड़ा उत्तराखण्ड का एक पहाड़ी जिला है। जो अपने खूबसूरती के लिए जाना जाता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

माता – पिता एवं परिवार

इनके पिता का नाम विशन सिंह मटियानी तथा माता का नाम लक्ष्मी देवी था। उनके दादा का नाम श्री जीत सिंह तथा परदादा का नाम टीकासिंह था। इनके पूर्वज मटेला गांव से आये थे, जो बाड़ेछीना से सात मील दूर स्थित है। मटेला के निवासी होने के कारण यह मटियानी कहलाते थे। कहते हैं कि उनके दादा सन् 1911 में मटेला छोड़कर बाडेछीना आ बसे थे। शैलेश मटियानी के पिता परिवार से अलग होने के बावजूद अपने पुत्र से भावनात्मक स्तर पर जुडे रहे। ईसाई के साथ शेष दाम्पत्य जीवन बिताने के बावजूद उन्होंने मृत्यु से पहले अपनी यह इच्छा प्रकट की थीं कि मरणोपरान्त उनके पार्थिव शरीर को उनका कोई ईसाई सम्बन्धी हाथ नहीं लगाएगा तथा उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से उनके पुत्र द्वारा सम्पन्न किया जायेगा। एक विवाहित हिन्दू पत्नी के कारण ईसाई धर्म अपना लेने से होने वाले आन्तरिक संघर्ष की अभिव्यक्ति शैलेश मटियानी ने 'कठफोड़वा' नामक कहानी में की है।

बचपन

माता–पिता के मृत्यु के बाद शैलेश और उनके भाई–बहन अपने चाचा सुन्दर सिंह के आश्रय में रहने लगे थे। उस समय सुन्दर सिंह के परिवार में दो नौकर लगे थे। तीसरे नौकर की स्थिति में शैलेश प्रयोग किये जाते थें। शैलेश को सुबह उठकर पानी भरने जाना, गाय, भैंस और बकरियों को चराना, गोठे ं का गोबर निकालकर घास–फूस निकालना, संध्या समय घर लौटते वक्त लकड़ी या घास का कट्टा सिर पर लादकर लाना यह शैलेश का नित्य नियमित कार्य था। शैलेश बाल्यावस्था के प्रारम्भ से ही संघर्षों में जीवन विताने लग गये थे। जिस अवस्था में सम्पन्न व्यक्तियों के बच्चे दुलार–प्यार मे ं पलते है ं, भौतिक सुख–साधनों के बीच मे ं खेलते–कूदते बड़े होते है। उन्हे ं अभावों की विभीषिका की कल्पना मात्र भी नहीं होती, शैलेश के बाल्यावस्था के प्रथम चरण से ही विपत्ति, कष्ठ, दुख एवं कठोर परिश्रम का अभिन्न सम्पर्क बना रहा। वे घर के सम्पूर्ण कार्यों को नौकर की भांति करते तथा समाज के संघर्षरत, श्रमिक एवं दीन–हीन वर्ग के सुख–दुख की संवेदनाओं को आत्मसात् करने लगे थे। शैलेश को जब पिता की याद आती है तो सोंचते हैं। ''जब तक पिता ''जब तक पिताजी साथ थे, जी साथ थे, किसी तरह का अभाव नहीं था। गाय बकरियाँ चराने किसी तरह का अभाव नहीं था। गाय बकरियाँ चराने, जंगल जाने, चराने, जंगल जाने, लकड़ियां काटने अथवा दूर–दूर से पानी के कनस्तर सिर पर ढोंने का कोई प्रश्न ही नहीं था। लेकिन इस दर्प में यह सब काम शुरू करने पर कि कोई यह न कह सक पर कि कोई यह न कह सके कि हराम की रोटी खा रहे हैं।'

शिक्षा–दीक्षा

शैलेश मटियानी ने बाड़ेछीना की प्राइमरी पाठशाला से सन् 1941 ई0 में प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अपनी गायों, भैंसों, बकरियों को चराने जाते समय स्कूल के बच्चों को देखकर पढ़ने की इच्छा होती। शैलेश के पढ़ने की इच्छा शक्ति को देखकर स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री लक्ष्मण सिंह गैलाकोटी ने उनके चाचा को समझाया और उनसे शैलेश को पढ़ाने की जिद की। इसी कारण सन् 1945 ई0 में पुनः स्कूल जाने का अवसर मिला और सन् 1948ई0 मे ं उन्होंने बाड़ेछीना मिडिल स्कूल के फाइनल परीक्षा में प्रथम श्रेणी आने वाले एकमात्र विद्यार्थी थे। सन् 1951 मे ं राजकीय इंटर कालेज, अल्मोड़ा मे ं बहुत सारी मुश्किलो ं को झेलते हुए शैलेश ने हाईस्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी मे ं पास की थी। उनके मन मे ं पढ़ने की बहुत इच्छा थी किन्तु अपनी आर्थिक परिस्थितियों के कारण मजबूरन पढ़ाई बन्द करनी पड़ी। वे आगे नहीं पढ़ सके।

संघर्षों का दौर

हिन्दी साहित्य के इतिहास में निराला, मुक्तिबोध, नागार्जुन आदि साहित्यकारों ने संघर्ष उठाया था और सरस्वती वन्दना इन्हें शिखर–पुरूष तक ले गई। अपने जीवन मे ं मृत्यु तक झंझावातो ंका सामना करते रहे और अपराजेय मनोबल से झेलते रहे। शैलेश ऐसे ही साहित्यकार रहे जिनका साथ समस्याओं ने पकड़ रखा था। इनका घर–बार व सगे–सम्बन्धी सभी छूटते गये। कैंटीन मे ं बर्तन धोना, फुटपाथों पर विक्षिप्तों की तरह इधर–उधर भटकते रहना, भोजन की तलाश मे ं जेलखानों का चक्कर लगाना आदि मटियानी का जीवन हो गया था। इस साहित्यकार मे ं शमशेर जी ने वृक्ष बनने की क्षमता नजर आई। शमशेर ने पंत के पास पत्र लिखकर भेजा भी लेकिन इन्हे ं वहां निराश होना पड़ा था।

3ण शैलेश मटियानी के संघर्षों की गाथा घर से ही प्रारम्भ हो चुकी थी। एक ओर धन वैभव से भरी दुनिया, दूसरी ओर गहरी निराशा, हताशा की जहालत भरी गरीबी, झुग्गी–झोपड़ी व फुटपाथों का जीवन जीने वाले शैलेश रेलवे–स्टेशन पर बिताने को मजबूर थे। पूंजीवादी व सरकारी शोषण के मकड़ जाल मे ं फंसने को मजबूर हुए थे। रात मे ं पेट की आग शांत करने के लिए 20 रू0 प्रति सेर के हिसाब से अपना खून बेंचना आरम्भ किये थे। ऐसी हीनता और हताशा से भरा जीवन मटियानी को तोड़ता रहा। निराशा की स्थिति बढ़ती रही और अतिशय भावुकता ने इन्हे ं मृत्यु की ओर प्रेरित किया। एक बडे साहित्यकार को मिलने वाला तिरस्कार उसके आत्मबोध को बढ़ता गया। एक श्रेष्ठ साहित्यकार बनने की सम्भावना थी तो रेल की पटरी पर जीवन–लीला समाप्त करने की इच्छा को आत्ममोह ने भंग कर दिया।

साहित्य जगत में पदार्पण

श्री मटियानी मे ं कविता लेखन की प्रवृत्ति सन् 1948 ई0 से ही जाग्रह हो चुकी थी। इनकी इच्छा अपनी कविता और कहानियो ं को पत्रिकाओं मे ं देखना था। अपनी रचनाओं को अल्मोड़ा नगर की पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के सारे प्रयास विफल रहे। परिणामस्वरूप इन्हें स्थानीय लोगों से उपेक्षा और तिस्कार ही सुनने ं को मिलता है। जैसे 'जुआरी का बेटा' और 'बूचड़ का भतीजा' कहानी लिखने की योग्यता ही न रखता हों। यह तिरस्कार शैलेश की रचनाओ ं को बल प्रदान की। सौभाग्य से सन् 1950 ई0 में शैलेश की दो कहानियाँ 'शांति ही जीवन है' तथा 'संघर्ष के क्षण' आचार्य ओमप्रकाश गुप्त द्वारा संपादित 'अमरकहानी' और 'रंगमहल' पत्रिका मे ं प्रकाशित हुई थी। पहली रचना पत्रिका में देखकर मटियानी को अवर्णनीय सुख का अनुभव हुआ था। दूसरी ओर घोर कलयुग का आना संकेत रूप में माना गया था जब जुआरी का बेटा, बूचड़ का भतीजा पंत, इलाचन्द्र बनने का सपना देख रहा हों।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इलाहाबाद साहित्यकारो ं की संगमस्थली रही है। यहाँ के साहित्यकारो ं की संगति प्राप्त करने की इच्छा हुई तो मटियानी आचार्य ओमप्रकाश गुप्ता के 'रंगमहल' पत्रिका के लिए एक उपन्यास 'दोराहा' (लघु उपन्यास) तीन दिन मे ं लिखकर पन्द्रह रूपये प्राप्त कर लिये थे। साहित्यकार बनने की महत्वाकांक्षा लिये सन् 1951 ई0 की दिसम्बर माह मे ं शैलेन्द्र इलाहाबाद पहुंच गये थे। रोजी–रोटी का ऐसा था कि एक साल भी रहना संभव नहीं हो सका। यही कारण है कि सन् 1952 ई0 मे ं दिल्ली चले गये। दिल्ली के नवभारत टाइम्स जुलाई माह मे ं शैलेश की एक कविता प्रकाशित होने के बावजूद उसका कोई परिश्रमिक उन्हे ं प्राप्त नहीं हुआ तो फिर वे वहाँ से मुम्बई चले गये।

साहित्यिक दृष्टि

आजादी के बाद के कथाकारो ं में शैलेश मटियानी का नाम अग्रणी कथाकारों में लिया जाता है। हिन्दी कथा–साहित्य की परम्परा को बढ़ाने में मटियानी रचनात्मक आयाम प्रदान किये। वे आंचलिक उपन्यासकारों में सर्वश्रेष्ठ है तथा साठोत्तरी कहानीकारों में उन्नायक कथाकार भी रहें। शैलेश मटियानी को एक स्वाभिमानी एंव खुद्दार लेखक के रूप में जाना जाता है। अपनी लेखकीय अस्मिता के प्रति सदैव सजग एंव सक्रिय रहते थे। उनकी कृतज्ञता की भावना में दीनता नहीं थी। अनेक अभावों के बावजूद उनका आत्मसम्मान सदैव कायम रहता था। जो भी सहयोग लिया गया वह अपने पात्रों से। शैलेश ने समाज के सुख–दुःख को अपनी रचनाओं के पात्रों के बीच मे ं रहकर स्वयं भोगा है। समाज के कटु अन्यायों[4] को भोगकर दीन–दुःखी, श्रमिक, कुली, भूखे, नंगे, आश्रयहीन के साथ जीवन बिताया है। उन्होंने अपनी रचनाओ ं मे ं भोगे हुए यथार्थ और प्रत्यक्ष देखे हुए यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है।

मटियानी की कृतियों में एक ओर पहाड़ियों की करूण कथा है तो दूसरी ओर मुंबई के फुटपातों की मर्मस्थली अनुभूति उभर आयी है एक ओर अंचल का सहज स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर युगीन संवेदना को बड़ी सफलता के साथ अभिव्यक्त किया है। संस्मरणात्मक निबन्धों का संकलन लेखक की हैसियत से हिन्दी साहित्य में एक अनूठी और महत्वपूर्ण कृति के रूप मे ं चर्चित है। पत्रकारिता क्षेत्र मे ं 'विकल्प' नये युग को जोड ़ने का प्रयास है। इसके साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, संवैधानिक और भाषायी आदि मुद्दों पर अपने विचारों को बेबाक ढंग से प्रस्तुत करने का साहस मटियानी में था।

शैलेश मटियानी का कहानी–लेखन

शैलेश मटियानी पचास वर्षों तक सक्रिय लेखन करने वाले, नई[5] कहानीं के पूरे दौर में अपने समकालीन कहानीकारों के बीच एक भिन्न स्तरीय अनुभव संपन्नता के कारण अपेक्षाकृत व्यापक उपयोगी[6] और अलग दिखायी देते है। उनके बहुत से समकालीन कहानीकार[7] जब परिवर्तित पारिवारिक संदर्भों की कहानियाँ लिख रहे थे, जिसमें अधिकांशतः स्त्री–पुरूष सम्बन्धों को लेकर बातें कही जा रही है वहाँ शैलेश मटियानी अपनी पीड़ा और आत्मसंघर्ष के सर्जनात्मक उपयोग के लिए कुछ अधिक बेचैन रहा करते थे। शैलेश मटियानी की कहानियों में भोगे हुए यथार्थ के कटु अनुभवा ें की कड ़वाहट मिलती है। वहीं दूसरी तरफ समाज द्वारा प्रताड़ित और शोषितों की[8] नारकीय जीवन है। कहानियों के पात्रों में मानवीय मूल्यों के दर्शन होते हैं, इसलिए उनके पात्रो ं की मानसिकता पहचाने के लिए हमे ं नये सौन्दर्यबोध को तलाशने की आवश्यकता होती है।

मटियानी आधुनिक गद्य में कबीर की तरह निडर होकर सच को सच और झूठ को झूठ कहने की नैतिक शक्ति रखने वाले कहानीकार है। दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले वे महान लेखक है। जो पुत्र शोक से उबरने की कोशिश करते हुए अपनी अन्तिम दो कहानियां परिवार अधारित लिखते है। 'नदि किनारे का गांव' तथा 'उपरान्त' दोनों कहानियों के परिवार खासे सम्पन्न है और भरे–पूरे है। मृत्यु को भुलाने, जीतने और पुत्र–शोक को बर्दाशत कर सकने की आका ंक्षाएं और आत्मसंघर्ष दोनों कहानियों में है। सच और सच की पीड़ा दोनों सहन करने वाला साहित्यकार कहानियों में न्याय तलाशता है। कभी इसी शोक से उबरने की कोशिश की थी। गोविन्द मिश्र ने अपनी लम्बी कहानी 'वरणांजलि' में लगता था जैसे– मृदुला गर्ग, जगजीत सिंह (गीतकार) या मैनेजर पांडेय युवा–पुत्रों की आकस्मिक मृत्युओं से अपनी वैचारिक और कलात्मक आस्था के सहारे उबरने की कोशिश करते रहे, उसी तरह शायद मटियानी की लेखकीय निष्ठा ही उन्हे ं अवसाद की खाई से बाहर निकाल ले। मगर ऐसा हो नहीं पाया। जीवन भर आस्था और संघर्ष चलता रहा।

शैलेश मटियानी के कहानियों का कालक्रमानुसार संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास यहाँ किया गया है–

कहानी संग्रह	**प्रकाशन वर्ष**	**शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ**
मेरी तेंतीस कहानियाँ	1961	शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1
दो दुखों का एक सुख	1966	
सुहागिनी तथा अन्य कहानियां	1967	शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–2
दूसरों के लिये	1967	
सफर पर जाने से पहले	1969	
हारा हुआ	1970	
अतीत तथा अन्य कहानियाँ	1972	
पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ	1973	शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–3
हत्यारे	1973	
बर्फ की चट्टाने–1	1974	
जंगल में मंगल	1975	
महाभोज	1975	
कोहरा	1980	
अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ	1987	शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–4

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नाच जमूरे नाच	1989
बर्फ की चट्टाने–2	1990
नदी किनारे का गांव	2004

शैलेश मटियानी के उपन्यास

- बोरीवली से बोरीबन्दर तक (1959): मुंबई के महानगरीय जीवन का यथार्थ।
- कबूतरखाना (1960): महानगरीय जीवन में अर्थाभाव और वेश्याओं की समस्या।
- हौलदार (1960): पर्वतीय अंचल में जीते समाज के जीवन का यथार्थ
- किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई (1660): नारी जीवन की त्रासदी और विभीषिका का यथार्थ
- चिट्ठी रसैन (1961): उड़ल गांव के जन–जीवन का सामाजिक यथार्थ।
- चौथी मुट्ठी (1961) : आचंलिक जीवन की पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याएँ
- मुख सरोवर के हंस (1962): लोक कथा के माध्यम से आंचलिक परिवेश के सांस्कृतिक जीवन
- एक मूठ सरसों (1963): सामाजिक कलंक से पीड़ित नारी की मनोव्यथा
- कोई अजनबी नहीं (1965): स्त्री, पुरूष, मजदूर जीवन का यथार्थ
- मंजिल दर मंजिल (1966): आर्थिक विपन्नता और मनुष्य की लाचारी
- पुनर्जन्म के बाद (1970): लोककथा के माध्यम से महानगरीय जीवन की अतृप्त आकांक्षाओं और कुठाओं की अभिव्यक्ति
- माया सरोवर (जलतरंग) (1973): अतृप्त आकांक्षाओं और कुंठाओं की अभिव्यक्ति
- बर्फ गिर चुकने के बाद (1975) : फिल्मी जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति
- छोटे–छोटे पक्षी (1975): प्रेम–विवाह की समस्या
- भागे हुए लोग (1976) अंधविश्वास और पाखण्ड का पर्दाफाश
- आकांश कितना अनत है (1976): गरीबी और बेकारी की समस्या
- रामकली (1978): दहेज और अनमेल विवाह की समस्या
- डेरेवाले (1980): पीढ़ी दर पीढ़ी वेश्यावृत्ति से जुड़े समाज का चित्रण
- सवित्तरी (1981) नारी जीवन की करूणा और उसके आत्म संघर्ष की पीड़ा
- गोपुली गफूरन (1981) : गोपुली से गफूरन बनने तक की कथा और व्यथा
- बावन नदियों का संगम (1981): पाखंडी और ढोंगी नेताओं का पर्दाफाश
- चंद औरतों का शहर (1981): विजातीय विवाह की समस्या
- अर्धकुम्भ की यात्रा (1983): मनुष्य की बदलती मानसिक स्थिति का चित्रण
- मुठभेड़ (1984): राजनीतिक और सरकारी तंत्र की संवदेनशून्यता
- नागवल्लरी (1985) सामाजिक जीवन में राजनीतिक हस्तक्षेप तथा अन्तर्जातीय विवाह की समस्या
- उगतें सूरज की किरन (1993): नारी चरित्रों की प्रधानता
- उत्तरकाण्ड (1999): कुमाऊँ अंचल का बदलता राजनीतिक पटल।

उपसंहार

शैलेश मटियानी हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। इनका साहित्य भारतीय जन–जनजीवन एवं उसकी भावनाओं का साक्षात् प्रतिरूप है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ मटियानी के कथा साहित्य मे ं मुखरित होती हैं। उनकी कथाओं में मनुष्य केन्द्र में है, जहाँ देशकाल और समाज के सभी यक्षप्रश्नो ं को पारदर्शी बनाने का कार्य लेखक द्वारा हुआ है। मनुष्य के कोमल तत्त्वों को आकार देने का काम चिन्तनशीलता के आधार पर करता है, जो मानवता के हित में किया गया है। शैलेश मटियानी अपने व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष का ही रास्ता चुना। वही संघर्ष इनके कहानियों एवं उपन्यासों में मिलता है। इनके कथा साहित्य विषय अभिव्यक्ति व शैली के स्तर पर पाठकों को झकझोरा है और सराहना प्राप्त की है। पात्रों का चयन निम्न मध्यवर्ग से हुआ है, जो पूरी तरह से सामान्य हैं। आमतौर पर इनके पात्र मजदूर वर्ग के है और शोषको ं के शिकंजे में कसे हुए, मुक्ति के लिए छटपटाते नजर आते हैं। मटियानी अपनी कहानियो ं में पूरी ईमानदारी से इनके भीतर छिपी मानवीयता को उजागर करते हुए उनके संघर्षमय जीवन को सार्थकता प्रदान करने का संवेदनशील प्रयत्न करते दिखाई देते हैं। अतः शैलेश मटियानी को अगर जनकथाकार कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

संधर्व ग्रन्थ सूची

1 राकेश मटियानी शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानिया ँ–1 प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद 2004

2 राकेश मटियानी शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ–2 प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद 2004

3 राकेश मटियानी शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ–3 प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद 2004

4 शैलेश मटियानी बोरीवली स ` बोरीबन्दर तक अनाभिका प्रकाशन, इलाहाबाद 1954

5 शैलेश मटियानी छोट`–छोट` पक्षी प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद 1975

6 शैलेश मटियानी भागे हुए लोग किताब महल, इलाहाबाद (आशु प्रकाशन, इलाहाबाद 2006)

7 शैलेश मटियानी डेर`वाले सरस्वती बिहार, दिल्ली (सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 2010) 1978

8 शैलेश मटियानी बावन नदियों का संगम विभा प्रकाशन, इलाहाबाद (सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2010)

9 शैलेश मटियानी मुठभेड़ शारदा सदन, इलाहाबाद 1983

10 शैलेश मटियानी पर्वत से सागर तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली 2000

11 शैलेश मटियानी मुड–मुडकर मत देख विभा प्रकाशन, इलाहाबाद 2001